WORK-1 24/8/20 to 29/8/20
STD XI

5. आधुनिक शिक्षा-प्रणाली

भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा का प्रचार-प्रसार था। इसका इतिहास बहुत पुराना है। पहले आश्रम शिक्षा पद्धति थी, छात्र निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते थे, वहीं उसके बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, नालन्दा, तक्षशिला विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई जहाँ भारतीय सभ्यता व संस्कृति की शिक्षा दी जाती थी। इन विश्वविद्यालयों में विदेशों से भी छात्र विद्या ग्रहण करने आते थे।

स्वतन्त्रता से पूर्व परतन्त्रता के युग मे विदेशी शासकों ने अपने राष्ट्र की शिक्षा पद्धति को प्रचलित किया। हालांकि स्वतन्त्रता के पहले और बाद में शिक्षाविदों ने समय-समय पर शिक्षा में परिवर्तन एवम् सुधार किए, पर शिक्षा का जो उद्देश्य है—'बालक का सर्वांगीण विकास करना', उस उत्तम प्रणाली को हम अभी तक नहीं खोज पाए हैं। गाँधीजी के अनुसार—"शिक्षा शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास करती है।" अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास, प्रतिभा व योग्यता में निखार लाने के साथ ही छात्र अपनी प्रतिभा का विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग कर उसका लाभ उठा सकें—शिक्षा पद्धति में ये गुण होने चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य! आज हमारी शिक्षा पद्धति का व्यावसायीकरण हो गया है।

आज के वैज्ञानिक युग में हम भौतिकवादी हो गए हैं और हर वस्तु में लाभ खोजते हैं यही कारण है कि शिक्षा को भी एक व्यवसाय मानने लगे हैं। वर्तमान शिक्षा-पद्धति के जनक व संस्थापक विदेशी शिक्षाविद श्री मैकाले थे। उस शिक्षा पद्धति में भारतीय संस्कृति व सभ्यता, परम्परा व राष्ट्रीयता की भावना शून्य थी जिसने क्लर्कों को ही पैदा किया।

Scanned with CamScanner

हमारे देश में मेधावी छात्रों की कमी नहीं है लेकिन इस शिक्षा पद्धति ने उन्हें कहीं का नहीं छोड़ा। अभिभावक बालक को शिक्षित होकर सभ्य बनने हेतु विद्यालय भेजते हैं पर वह बनता है पढ़ा लिखा बेकार, साथ ही एक भ्रष्ट नागरिक। विद्यार्थी अपने वंश-परम्परा के व्यवसाय को अपनाना नहीं चाहता और बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि करता है।

नैतिकता जीवन का मूल मन्त्र है, चारित्रिक गुण है। लेकिन आज इसका सर्वत्र अभाव है। छात्रों में उच्छृंखलता व अराजकता बढ़ रही है। कारण है छात्रों की पढ़ाई के प्रति अरुचि एवम् उनकी प्रतिभा व रुचि के अनुसार विषय न मिल पाना। वर्तमान शिक्षा प्रणाली जीवन के लिए घोर अभिशाप सिद्ध हो रही है। शिक्षा अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में असफल है। आज का शिक्षित युवक दूसरों के लिए ही नहीं स्वयं के लिए भी कष्टदायी हो गया है।

आज के इस वैज्ञानिक व कम्प्यूटर के युग में जहाँ सबको आगे बढ़ने की होड़ लगी है वहाँ अत्याधुनिक तकनीकी शिक्षा पद्धति की आवश्यकता है। नए पाठ्यक्रम, नये विषय प्रशिक्षण व जागरूकता की आवश्यकता है जिससे छात्रों की प्रतिभा व क्षमता का लाभ उठाया जा सके। हमारे देश में समय-समय पर शिक्षा-आयोगों की नियुक्तियाँ तो हुईं, नई शिक्षा-पद्धति पर विचार भी हुआ लेकिन उसको अमल में नहीं लाया जा सका, कारण था—धनाभाव।

सरकार से, शिक्षाविदों से व मानव संसाधन विकास मंत्रालय से यही अपेक्षा है कि एक उपयोगी नीति का निर्धारण करें जिसमें मानवीय प्रतिभाओं के विकास के लिए सम्भावना हो सके तथा छात्रों की प्रतिभा का लाभ उठाने के लिए उनके शिक्षण की व्यवस्था हो। कहीं ऐसा न हो कि धनाभाव में प्रतिभाशाली छात्रों की क्षमताओं के लाभ से देश वंचित हो जाए।

वोटों की राजनीति के चक्कर में सबको शिक्षा देने के लिए उसमें एक तुर्रा और जोड़ दिया गया—'आरक्षण'। यह आरक्षण नीति भी मेधावी छात्रों के आगे आने में आड़े आ रही है। इसमें जाति, धर्म के आधार पर आरक्षण न हो बल्कि छात्रों की क्षमता के आधार पर उनके लिए शिक्षा सुविधाओं का प्रावधान होना चाहिए।

अब राजनीतिज्ञों व शिक्षाविदों के चेतने का समय आ गया है। भारत सरकार को चाहिए कि नई शिक्षा पद्धति पर विचार कर उसको लागू करे जिससे मेधावी छात्रों को शिक्षण की सुविधाएँ मिलें तथा शिक्षा की पवित्रता को बनाए रखा जा सके।

Scanned with CamScanner